बात से सहमत थी कि पर्यावरण मानव जीवन को प्रभावित करता है परन्तु इस बात से बिल्कुल भी सहमत नहीं थी कि वो मानव जीवन को नियंत्रित करता है या उसके विकास की गति या दिशा निर्धारित करता है।

विचारधारा की मान्यता :→ यह विचारधारा इस मान्यता पर निर्भर है कि विकास के सारे साधन प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए है। इन साधनों में विकास की अनेक सम्भावनाएं मौजूद है। इसमें से किस सम्भावना या दिशा का चुनाव होना है यह पूर्णतः मानव पर निर्भर करता है। फेवर ने सम्भावनावादी विचारधारा को स्पष्ट करते हुए कहा है कि "कहीं भी विवशताएं नहीं होती, वरन सभी जगह सम्भावनाएं होते है तथा मनुष्य इन सम्भावनाओं का स्वामी होने के नाते उसके उपयोग के लिए स्वयं निर्णायक होता है।"

सम्भाव्यतावाद → इसकी संकल्पना स्पेट ने (1957) में दी थी। इसकी मान्यता थी कि प्रकृति न ही मनुष्य के विकास को सही दिशा देता है न ही उसका अंतिम कारण होता है, पर प्रकृति मानव के प्रगति के गति को प्रभावित जरूर करता है। सम्भावयता वाद की मान्यता का एक मुख्य अंग यह भी था कि कई सम्भावनाएं अन्य सम्भावनाओं से अधिक सम्भाव्य होती है। जिसका निर्णय मनुष्य अपने सामाजिक स्थिती प्राकृतिक वातावरण और तकनीकी ज्ञान को माप कर लेता है कौन सी सम्भावयता वास्तविक बनेगी यह समाज के तकनीकी ज्ञान पर निर्भर है।

नव नियतिवादी विचारधारा → इस संकल्पना का प्रतिपादन ग्रिफिथ टेलर ने 1951 में किया था जो स्पेट के सम्भावनावादी चिंतन से काफी मेल खाती है। टेलर ने यह बताया कि मानव के जीवन में पर्यावरण की भूमिका नियतिवादी नहीं है, हाँ पर्यावरण

मानव ने विज्ञान की प्रगति पर गर्व है। मानव अपने तकनीकी ज्ञान से इन सम्भावित प्रभावों को कम परिवर्तित कर सकता है परन्तु उसे समाप्त नहीं कर सकता। टेलर ने अपने विचारधारा को स्पष्ट करते हुए बताया की प्रकृति में संसाधनों की सुलभता हर जगह एक समान नहीं है तो अगर मानव किसी दुर्गम क्षेत्र में प्रकृति की चेतावनी पर ध्यान नहीं देता है तो उसे भयावह परिणाम भुगतने पड़ सकते है।

टेलर के अनुसार मानव का विकास चौराहे पर हो रहे यातायात प्रवाह के जैसी है। मानव चौराहे पर एक सिपाही की भूमिका में है तो किसी भी गाड़ी (वाहन) को अपनी मंजिल से विमुख नहीं कर सकता है, सिपाही एक उस वाहन को थोड़ी देर रोक सकता है या उसकी गति को धीमा कर सकता है ताकि मार्ग पर अव्यवस्था ना हो और वाहनों का आवागमन अनुशासित तरीके से निरंतर चलता रहे।

पारिस्थितिक उपागम → इसके अंतर्गत सतत् पोषणीय विकास की संकल्पना शामिल है। जो इस मान्यता पर आधारित है कि →

- पर्यावरण में जो संसाधन मौजूद है उसकी मात्रा काफी सीमित है हमें उनका प्रयोग विवेकपूर्ण तरीके से करना चाहिए।
- हमें संसाधनों का इस प्रकार प्रयोग करना चाहिए की होमियोस्टेटिक क्रियाविधि हमेशा संतुलित बनी रहे।
- होमियोस्टेटिक गतिविधि संतुलित रहेगी तो इस संसाधनों को हमारी भविष्य की पीढ़ी द्वारा भी प्रयोग किया जा सकेगा।

इस संकल्पना को सुधारवादी संकल्पना माना जा सकता है जिसका विकास भूतकाल से आज तक के पर्यावरण विदोहन को ध्यान में रखकर किया गया है।

पर्यावरण एवं मानव अन्तःसम्बन्ध

टैन्सर ने मनुष्य एवं पर्यावरण सम्बन्धों पर नवीन विचार व्यक्त किया। उन्होंने पूर्व प्रचलित नियतिवादी व सम्भववादी विचारधारा की आलोचना करते हुए संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की पेशकश की उन्होंने कहा कि न तो प्रकृति सर्वशक्तिमान है और न ही मानव।